

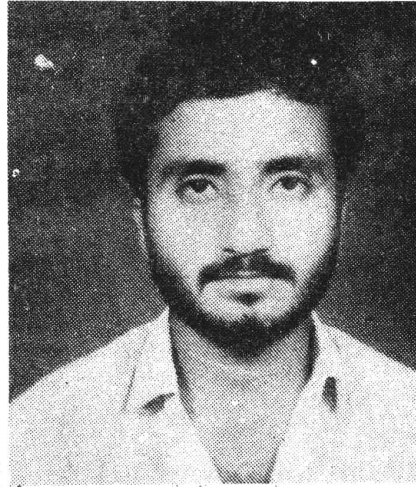
Janstta, 18 December 1993, New Delhi

## आर्थिक तंगी उनके अगले पड़ाव में अड़चन बनी

जनसत्ता संवाददाता

नई दिल्ली, १८ दिसंबर । गणित के मेधावी छात्र आनंद कुमार ने कम उम्र में ही काफी उपलब्धियां हासिल की हैं। गणित जैसे जटिल विषय को उन्होंने आसान बनाने की कोशिश की। उनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर देश-विदेश से बधाई पत्र आए हैं। कई विदेशी विश्वविद्यालयों की तरफ से उन्हें शोध कार्य के लिए बुलाया गया है। अपना ज्ञान बढ़ाने के लिए आनंद इस मौके का फायदा उठाना चाहते हैं। पर उनकी आर्थिक हैसियत इतनी नहीं है कि वे विदेश जाने, रहने का खर्चा उठा सकें। लिहाजा वे प्रायोजक की तलाश में हैं।

आनंद कुमार पटना (बिहार) के जकनपुर के निवासी



आनंद कुमार

हैं। उनके पिता डाक विभाग में कर्मचारी हैं। आनंद ने १९८७ में पटना हाईस्कूल से मैट्रिक और १९८९ में बीएन कालेज से आईएससी की परीक्षा पास की है। अभी वे स्नातक कक्षा के छात्र हैं। वे २० साल के हैं। गणित में प्रतिष्ठा की परीक्षा वे प्रथम श्रेणी में पास कर चुके हैं। इस समय तक ज्यादातर छात्र जब अपने पाठ्यक्रम में ही उलझे रहते हैं। तब आनंद इससे आगे की पढ़ाई में व्यस्त हैं। आनंद ने गणित में कई अंतरराष्ट्रीय स्तर के शोध किए हैं।

महान गणितज्ञ केएफ गॉस ने गणित को विज्ञान की

महारानी और अंकगणित को गणित की महारानी बताया था। अंकगणित के ही विस्तृत रूप को संख्या सिद्धांत के नाम से जाना जाता है। जो कि काफी जटिल भी समझा जाता है। संख्या सिद्धांत गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजम का शोध विषय रहा था। आनंद कुमार ने भी इसी संख्या-सिद्धांत में कई महत्वपूर्ण शोध किए हैं। 'थ्योरी आफ डिविजिबिलिटी' पर आधारित एक समस्या का हल उन्होंने किया है। जो कि विश्व विख्यात लंदन से प्रकाशित 'दी मैथेमेटिकल गजट' में छपा है। इसमें उन्होंने दिखाया है कि किसी गणितीय कंजक के संख्यात्मक मान के अंतिम अंक का भाजक से क्या संबंध होता है।

'आन द स्क्वेयरिंग आफ द डिजिट्स आफ ए नंबर' नाम का शोध पत्र इंग्लैंड के मैथेमेटिकल सोसट्रम में प्रकाशित हुआ है। इसमें आनंद ने ए पोरगेस के शोध को आगे बढ़ाया है। पोरगेस ने अपने शोध को केवल उन्हीं संख्याओं के लिए किया था। जिनका आधार १० हो। लेकिन आनंद ने इसे दो से नौ तक सभी आधार वाले संख्याओं के लिए किया है। 'बौना मैथेमेटिका' में प्रकाशित 'लिलि प्रापर्टी आफ नंबर' में आनंद ने दिखाया है कि किसी संख्या के अंकों को वर्ग करके जोड़ा जाए और यही प्रक्रिया अगर बार-बार दोहराई जाए तो एक 'चक्र' या 'स्थिरांक' प्राप्त होता है। इसकी विस्तृत चर्चा इसमें की गई है। इसके अलावा भी आनंद ने कई संख्याओं के गुणों को खोजा है। इनके कई शोध पत्र विदेश में प्रकाशन के लिए विचाराधीन हैं। आनंद का मानना है कि संख्या के गुणों के उपयोग से आधुनिक गणित को काफी समृद्ध बनाया जा सकता है।

इनके शोध पत्रों के आधार पर इन्हें इंग्लैंड के कई मशहूर यूनिवर्सिटी से उच्च शिक्षा के लिए बुलावा आया है।